سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ

उन का क़िबला	से	उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया	किस	लोग	से	बेवक़ूफ़	अब कहेंगे

الَّتِیْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ

जिस को चाहता है	वह हिदायत देता है	और मग़्रिब	मश्रिक़	अल्लाह के लिए	आप कह दें	उस पर	वह थे	वह जिस

اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

गवाह	ताकि तुम हो	मोअ़तदिल	उम्मत	हम ने तुम्हें बनाया	और उसी तरह	142	सीधा	रास्ता	तरफ़

عَلَی النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ

वह जिस	क़िबला	और नहीं मुक़र्रर किया हम ने	गवाह	तुम पर	रसूल	और हो	लोग	पर

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰی عَقِبَيْهِ ؕ

अपनी एड़ियां	पर	फिर जाता है	उस से जो	रसूल (स)	पैरवी करता है	ताकि हम मालूम कर लें कौन	मगर	उस पर	आप (स) थे

وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَی الَّذِيْنَ هَدَی اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं	अल्लाह	हिदायत दी	जिन्हें	पर	मगर	भारी बात	यह थी	और बेशक

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾ قَدْ نَرٰی تَقَلُّبَ

बार बार फिरना	हम देखते हैं	143	रहम करने वाला	बड़ा शफ़ीक़	लोगों के साथ	बेशक अल्लाह	तुम्हारा ईमान	कि वह ज़ाया करे

وَجْهِكَ فِی السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ

तरफ़	अपना मुंह	पस आप फेर लें	उसे आप (स) पसन्द करते हैं	क़िबला	तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को	आस्मान	में (तरफ़)	आप (स) का मुंह

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

जिन्हें	और बेशक	उस की तरफ़	अपने मुंह	सो फेर लिया करो	तुम हो	और जहां कहीं	मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा)

اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	उन का रब	से	हक़	कि यह	वह ज़रूर जानते हैं	दी गई किताब (अहले किताब)

يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا

वह पैरवी न करेंगे	निशानियां	तमाम	दी गई किताब (अहले किताब)	जिन्हें	आप (स) लाएं	और अगर	144	वह करते हैं

قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ

किसी	क़िबला	पैरवी करने वाला	उन से कोई	और नहीं	उन का क़िबला	पैरवी करने वाले	आप (स)	और न	आप (स) का क़िबला

وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ

बेशक आप(स)	इल्म	कि आ चुका आप के पास	उस के बाद	उन की ख़ाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ

وقف لازم

वह पहचानते हैं	जैसे	वह उसे पहचानते हैं	किताब	हम ने दी	और जिन्हें	145	बे इन्साफ़	से	अब

اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

وقف منزل

146	वह जानते हैं	हालांकि वह	हक़	वह छुपाते हैं	उन से	एक गिरोह	और बेशक	अपने बेटे

अब बेवक़ूफ़ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज़ ने उस क़िबले से फेर दिया जिस पर वह थे? आप कह दें कि मश्रिक़ और मग़्रिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ़। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअ़तदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुक़र्रर नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे मगर (इस लिए) कि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावँ), और बेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, बेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक़, रहम करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ़ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) की तरफ़ फेर लें, और जहां कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ़, और बेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक़ है उन के रब की तरफ़ से, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियां वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की ख़ाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब बेशक आप बे इन्साफ़ों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और बेशक उन में से एक गिरोह हक़ को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं। (146)

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ ع وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ ع ١٧ / ٦

वह	एक सिम्त	और हर एक के लिए	147	शक करने वाले	से	पस आप न हो जाएं	आप का रब	से	हक़

مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ وقف النبی ﷺ

इकट्ठा	अल्लाह	ले आएगा तुम्हें	तुम होगे	जहां कहीं	नेकियां	पस तुम सबक़त ले जाओ	उस तरफ़ रुख़ करता है

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

अपना रुख़	पस कर लें	आप (स) निकलें	जहां	और से	148	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	आप (स) के रब से	हक़	और बेशक यही	मस्जिदे हराम	तरफ़

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ

मस्जिदे हराम	तरफ़	अपना रुख़	पस कर लें	आप निकलें	और जहां से	149	तुम करते हो

وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ

तुम पर	लोगों के लिए	रहे	ताकि न	उस की तरफ़	अपने रुख़	सो कर लो	तुम हो	और जहां कहीं

حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۙ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۙ وَلِاُتِمَّ

ताकि मैं पूरी कर दूँ	और डरो मुझ से	सो तुम न डरो उन से	उन से	बे इन्साफ़	वह जो कि	सिवाए	कोई हुज्जत

نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ

तुम में से	एक रसूल	तुम में	हम ने भेजा	जैसा कि	150	हिदायत पाओ	और ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत

يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا

जो	और सिखाते हैं तुम्हें	और हिक्मत	किताब	और सिखाते हैं तुम को	और पाक करते हैं तुम्हें	हमारे हुक्म	तुम पर	वह पढ़ते हैं

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾ فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾ ع ع ١٨ / ٥ معانقة ٣ عند المتأخرين ١٢

152	नाशुक्री करो मेरी	और न	और तुम शुक्र करो मेरा	मैं याद रखूँगा तुम्हें	सो याद करो मुझे	151	जानते	तुम न थे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

153	सब्र करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और नमाज़	सब्र से	तुम मदद मांगो	ईमान लाए	जो कि	ऐ

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	ज़िन्दा	बल्कि	मुर्दा	अल्लाह	रास्ता	में	मारे जाएं	उसे जो	कहो	और न

لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ

और नुक़सान	और भूक	ख़ौफ़	से	कुछ	और ज़रूर हम आज़माएंगे तुम्हें	154	तुम शऊर नहीं रखते

مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِيْنَ اِذَآ

जब	वह जो	155	सब्र करने वाले	और ख़ुशख़बरी दें	और फल (जमा)	और जान (जमा)	माल (जमा)	से

اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾

156	लौटने वाले	उस की तरफ़	और हम	हम अल्लाह के लिए	वह कहें	कोई मुसीबत	पहुँचे उन्हें

(यह) हक़ है आप के रब की तरफ़ से, पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। (147)

और हर एक के लिए एक सिम्त है जिस तरफ़ वह रुख़ करता है, पस तुम नेकियों में सबक़त ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकटठा कर लेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (148)

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और बेशक आप के रब (की तरफ़) से यही हक़ है और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (149)

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रुख़ उस की तरफ़, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के जो उन में से बे इन्साफ़ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। (150)

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें पढ़ते हैं और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। (151)

सो मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूँगा, और तुम मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्री न करो। (152)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र और नमाज़ से मदद मांगो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (153)

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। (154)

और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुक़सान से, और आप (स) ख़ुशख़बरी दें सब्र करने वालों को। (155)

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। (156)

اُولٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُهۡتَدُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾

157	हिदायत याफ़्ता	वह	और यही लोग	और रहमत	उन का रब	से	इनायतें	उन पर	यही लोग

اِنَّ الصَّفَا وَالۡمَرۡوَةَ مِنۡ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنۡ حَجَّ الۡبَيۡتَ اَوِ اعۡتَمَرَ

उमरा करे	या	ख़ाने कअ़्बा	हज करे	पस जो	अल्लाह	निशानात	से	और मरवा	सफ़ा	बेशक

فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ اَنۡ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنۡ تَطَوَّعَ خَيۡرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	कोई नेकी	ख़ुशी से करे	और जो	उन दोनों	वह तवाफ़ करे	कि	उस पर	तो नहीं कोई हर्ज

شَاكِرٌ عَلِيۡمٌ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَكۡتُمُوۡنَ مَآ اَنۡزَلۡنَا مِنَ الۡبَيِّنٰتِ وَالۡهُدٰى

और हिदायत	खुली निशानियां	से	जो नाज़िल किया हम ने	छुपाते हैं	जो लोग	बेशक	158	जानने वाला	क़द्रदान

مِنۡۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الۡكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ اللّٰهُ

लानत करता है उन पर अल्लाह	यही लोग	किताब में	लोगों के लिए	हम ने वाज़ेह कर दिया	उस के बाद

وَيَلۡعَنُهُمُ اللّٰعِنُوۡنَ ﴿۱۵۹﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ تَابُوۡا وَاَصۡلَحُوۡا وَبَيَّنُوۡا

और वाज़ेह किया	और इस्लाह की	उन्हों ने तौबा की	वह लोग जो	सिवाए	159	लानत करने वाले	और लानत करते हैं उन पर

فَاُولٰٓئِكَ اَتُوۡبُ عَلَيۡهِمۡ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۶۰﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ

जो लोग	बेशक	160	रहम करने वाला	माफ़ करने वाला	और मैं	उन्हें	मैं माफ़ करता हूँ	पस यही लोग हैं

كَفَرُوۡا وَمَاتُوۡا وَهُمۡ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ اللّٰهِ وَالۡمَلٰٓئِكَةِ

और फ़रिश्ते	अल्लाह	लानत	उन पर	यही लोग	काफ़िर	और वह	और वह मर गए	काफ़िर हुए

وَالنَّاسِ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۱۶۱﴾ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ الۡعَذَابُ

अ़ज़ाब	उन से	न हलका होगा	उस में	हमेशा रहेंगे	161	तमाम	और लोग

وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ﴿۱۶۲﴾ وَاِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحۡمٰنُ

निहायत मेहरबान	सिवाए उस के	नहीं इबादत के लाइक़	(एक) यकता	माबूद	और माबूद तुम्हारा	162	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें

ع ۱۹ ۲۱ ۳ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۶۳﴾ اِنَّ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ

रात	और बदलते रहना	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश	में	बेशक	163	रहम करने वाला

وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ الَّتِىۡ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِمَا يَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَآ

और जो कि	लोग	नफ़ा देती है	साथ जो	समन्दर	में	बहती है	जो कि	और कश्ती	और दिन

اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا

उस के मरने के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	पानी	से	आस्मानों से	अल्लाह	उतारा

وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ

और बादल	हवाएं	और बदलना	हर (क़िस्म) के जानवर	से	उस में	और फैलाए

الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾

164	अ़क़्ल वाले	लोगों के लिए	निशानियां	और ज़मीन	आस्मान	दरमियान	ताबे

यही लोग हैं जिन पर उन के रब की तरफ़ से इनायतें हैं और रहमत है, और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं। (157)

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई ख़ाने कअ़्बा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ़ करे, और जो ख़ुशी से कोई नेकी करे तो बेशक अल्लाह क़द्रदान, जानने वाला है। (158)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते हैं लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह कर दिया, पस यही लोग हैं जिन्हें मैं माफ़ करता हूँ, और मैं माफ़ करने वाला, रहम करने वाला हूँ। (160)

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और वह (काफ़िर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अ़ज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, निहायत मेहरबान, रहम करने वाला। (163)

बेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कश्ती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफ़ा देती हैं, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अ़क़्ल वाले हैं। (164)

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्हों ने ज़ुल्म किया (उस वक़्त को) जब यह अ़ज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्हों ने पैरवी की थी और वह अ़ज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे। (166)

और वह कहेंगे जिन्हों ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुन्या में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्हों ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अ़मल उन्हें हस्रतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के क़दमों की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़्ता न हों। (170)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन की मिसाल उस शख़्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के), वह बहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उस की बन्दगी करते हो। (172)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ

मुहब्बत करते हैं उन से	शरीक	अल्लाह	सिवाए	से	अपनाते हैं	जो	लोग	और से

كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا

ज़ुल्म किया	वह जिन्हों ने	देख लें	और अगर	अल्लाह के लिए	मुहब्बत	सब से ज़ियादा	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	जैसे मुहब्बत

اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

165	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	और यह कि	तमाम	अल्लाह के लिए	कुव्वत	कि	अ़ज़ाब	जब देखेंगे

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ

अ़ज़ाब	और वह देखेंगे	पैरवी की	जिन्हों ने	से	पैरवी की गई	वह लोग जो	जब बेज़ार हो जाएंगे

وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً

दोबारा	हमारे लिए	काश कि	पैरवी की	वह जिन्हों ने	और कहेंगे	166	वसाइल	उन से	और कट जाएंगे

فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ

उन के अ़मल	अल्लाह	उन्हें दिखाएगा	उसी तरह	हम से	उन्हों ने बेज़ारी की	जैसे	उन से	तो हम बेज़ारी करते

حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا ع ٢٠ ٤

तुम खाओ	लोग	ऐ	167	आग से	निकलने वाले	और नहीं वह	उन पर	हस्रतें

مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ

शैतान	क़दमों	पैरवी करो	और न	पाक	हलाल	ज़मीन में	उस से जो

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ

और यह कि	और बेहयाई	बुराई	तुम्हें हुक्म देता है	सिर्फ़	168	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا

पैरवी करो	उन्हें	कहा जाता है	और जब	169	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहो

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ

हों	भला अगरचे	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	अल्लाह	जो उतारा

اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और मिसाल	170	और न हिदायत याफ़्ता हों	कुछ	न समझते हों	उन के बाप दादा

كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ

गूँगे	बहरे	और आवाज़	पुकारना	सिवाए	नहीं सुनता	उस को जो	पुकारता है	वह जो	मानिंद हालत

عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

पाक	से	तुम खाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	171	नहीं समझते	पस वह	अंधे

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

172	बन्दगी करते हो	सिर्फ़ उस की	अगर तुम हो	अल्लाह का	और शुक्र करो	जो हम ने तुम्हें दिया

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ

दर हक़ीक़त	हराम किया	तुम पर	मुर्दार	और खून	और गोश्त	सुव्वर	और जो	पुकारा गया	उस पर

لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह के सिवा	पस जो	लाचार हो जाए	न सरकशी करने वाला	और न	हद से बढ़ने वाला	तो नहीं	गुनाह	उस पर	बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ

बख़्शने वाला	रहम करने वाला	173	बेशक	जो लोग	छुपाते हैं	जो उतारा	अल्लाह	से	किताब

وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰۗىِٕكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ

और वसूल करते हैं	उस से	क़ीमत	थोड़ी	यही लोग	नहीं खाते	में	अपने पेटों

اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ښ وَلَهُمْ عَذَابٌ

मगर (सिर्फ़)	आग	और न	बात करेगा	अल्लाह	क़ियामत के दिन	और न	पाक करेगा उन्हें	और उन के लिए	अ़ज़ाब

اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ

दर्दनाक	174	यही लोग	जिन्हों ने	मोल ली	गुमराही	हिदायत के बदले	और अ़ज़ाब

بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ

मग़्फ़िरत के बदले	सो किस क़द्र	बहुत सब्र करने वाले वह	पर	आग	175	यह	इस लिए कि	अल्लाह	नाज़िल की

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ

किताब	हक़ के साथ	और बेशक	जो लोग	इख़्तिलाफ़ किया	में	किताब	में

ع ٢١ ٩ ٥ الربع

شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

ज़िद	दूर	176	नहीं	नेकी	कि	तुम कर लो	अपने मुँह	तरफ़	मश्रिक़

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ

और मग़रिब	और लेकिन	नेकी	जो	ईमान लाए	अल्लाह पर	और दिन	आख़िरत	और फ़रिश्ते

وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰي حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى

और किताब	और नबियों	और दे	माल	उस की मुहब्बत पर	रिश्तेदार

وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّاۗىِٕلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ

और यतीम (जमा)	और मिस्कीन (जमा)	और मुसाफ़िर	और सवाल करने वाले	और गर्दनों में

وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ

और क़ाइम करे	नमाज़	और अदा करे	ज़कात	और पूरा करने वाले	अपने अ़हद

اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ۭ

जब	वह अ़हद करें	और सब्र करने वाले	में	सख़्ती	और तक्लीफ़	और वक़्त	जंग

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

यही लोग	वह जो कि	उन्हों ने सच कहा	और यही लोग	वह	परहेज़गार	177

दर हक़ीक़त (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (173)

बेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी क़ीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़्फ़िरत के बदले अ़ज़ाब, सो किस क़द्र ज़्यादा वह आग पर सब्र करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की, और बेशक जिन लोगों ने किताब में इख़्तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मश्रिक़ या मग़रिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर और फ़रिश्तों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिश्तेदारों को और यतीमों और मिस्कीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे, और जब वह अ़हद करें तो उसे पूरा करें, और सब्र करने वाले सख़्ती में और तक्लीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

ऐ ईमान वालो! तुम पर फ़र्ज़ किया गया क़िसास मक़्तूलों (के बारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम, और औरत के बदले औरत, पस जिसे उस के भाई की तरफ़ से कुछ माफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक़ पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीक़े से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है, पस जिस ने उस के बाद ज़ियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (178)

और तुम्हारे लिए क़िसास में ज़िन्दगी है, ऐ अ़क़्ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (179)

तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए, अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिशतेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक़, यह लाज़िम है परहेज़गारों पर। (180)

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्हों ने उसे बदला, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (181)

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (182)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (183)

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो खुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (184)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ

मक़्तूलों में	क़िसास	फ़र्ज़ किया गया तुम पर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ

اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ

उस का भाई	से	उस के लिए	माफ़ किया जाए	पस जिसे	औरत के बदले	और औरत	गुलाम के बदले	और गुलाम	आज़ाद के बदले	आज़ाद

شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

आसानी	यह	अच्छा तरीक़ा	उसे	और अदा करना	मुताबिक़ दस्तूर	तो पैरवी करना	कुछ

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾

178	दर्दनाक	अ़ज़ाब	तो उस के लिए	उस	बाद	ज़ियादती की	पस जो	और रहमत	तुम्हारा रब	से

وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

179	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम	ऐ अ़क़्ल वालो	ज़िन्दगी	क़िसास	में	और तुम्हारे लिए

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ الْوَصِيَّةُ

वसीयत	माल	छोड़ा	अगर	मौत	तुम्हारा कोई	आए	जब	फ़र्ज़ किया गया तुम पर

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾

180	परहेज़गार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	और रिशतेदारों	माँ बाप के लिए

فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ

उसे बदला	जो लोग	पर	उस का गुनाह	तो सिर्फ़	उस को सुना	बाद जो	बदल दे उसे	फिर जो

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۱﴾ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا

या गुनाह	तरफ़दारी	वसीयत करने वाला	से	ख़ौफ़ करे	पस जो	181	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह

فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ ع ٢٢ ٦ ٦

182	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उस पर	तो नहीं गुनाह	उन के दरमियान	फिर सुलह करा दे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	पर	फ़र्ज़ किए गए	जैसे	रोज़े	तुम पर	फ़र्ज़ किए गए	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ

हो	पस जो	गिनती के	चन्द दिन	183	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	तुम से पहले

مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	और पर	दूसरे (बाद) के दिन	से	तो गिनती	सफ़र	पर	या	बीमार	तुम में से

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

कोई नेकी	खुशी से करे	पस जो	नादार	खाना	बदला	ताक़त रखते हों

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾

184	जानते हो	तुम हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए	तुम रोज़ा रखो	और अगर	बेहतर उस के लिए	तो वह

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ

लोगों के लिए	हिदायत	कुरआन	उस में	नाज़िल किया गया	जिस	रमज़ान	महीना

وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ

महीना	तुम में से	पाए	पस जो	और फ़ुरक़ान	हिदायत	से	और रौशन दलीलें

فَلْيَصُمْهُ ۭ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ

बाद के दिन	से	तो गिनती पूरी करले	सफ़र	पर	या	बीमार	हो	और जो	चाहिए कि रोज़े रखे

يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۡ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ

गिनती	और ताकि तुम पूरी करो	दुश्वारी	तुम्हारे लिए	और नहीं चाहता	आसानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह	चाहता है

وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ١٨٥ وَاِذَا سَاَلَكَ

आप से पूछें	और जब	185	शुक्र अदा करो	और ताकि तुम	जो तुम्हें हिदायत दी	पर	अल्लाह	और ताकि तुम बड़ाई करो

عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۭ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

मुझ से मांगे	जब	पुकारने वाला	दुआ	मैं क़ुबूल करता हूँ	क़रीब	तो मैं	मेरे बारे में	मेरे बन्दे

فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ١٨٦

186	वह हिदायत पाएं	ताकि वह	मुझ पर	और ईमान लाएं	मेरा	पस चाहिए हुक्म मानें

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَاۗىِٕكُمْ ۭ هُنَّ

वह	अपनी औरतें	तरफ़ (से)	बेपर्दा होना	रोज़ा	रात	तुम्हारे लिए	जाइज़ कर दिया गया

لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ

तुम थे	कि तुम	जान लिया अल्लाह	उन के लिए	लिबास	और तुम	तुम्हारे लिए	लिबास

تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْــٰٔنَ

पस अब	तुम से	और दरगुज़र की	तुम को	सो माफ़ कर दिया	अपने तईं	ख़ियानत करते

بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى

यहां तक कि	और पियो	और खाओ	तुम्हारे लिए	लिख दिया अल्लाह	जो	और तलब करो	उन से मिलो

يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۠

फ़ज्र	से	सियाह	धारी	से	सफ़ेद	धारी	तुम्हारे लिए	वाज़ेह हो जाए

ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ

जबकि तुम	उन से मिलो	और न	रात	तक	रोज़ा	तुम पूरा करो	फिर

عٰكِفُوْنَ فِي الْمَسٰجِدِ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْھَا ۭ

उन के क़रीब जाओ	पस न	अल्लाह	हदें	यह	मस्जिदों में	एतिकाफ़ करने वाले

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ١٨٧

187	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने हुक्म	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

रमज़ान का महीना है जिस में कुरआन नाज़िल किया गया, कुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फ़ुरक़ान (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों मे गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछें तो मैं क़रीब हूँ, मैं क़ुबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ जब वह मुझ से मांगे, पस चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं। (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औ़रतों से बेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तईं ख़ियानत करते थे सो उस ने तुम को माफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज्र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम मोतकिफ़ हो मस्जिदों में (हालते एतिकाफ़ में), यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के क़रीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए अपने हुक्म ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक़, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। **(188)**

और आप (स) से नए चाँद के बारे में पूछते हैं? आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औक़ात लोगों और हज के लिए हैं, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। **(189)**

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता! **(190)**

और उन्हें मार डालो जहां उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मस्जिदे हराम (ख़ानाए कअ़बा) के पास न लड़ो यहां तक कि वह यहां तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की! **(191)**

फिर अगर वह बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। **(192)**

और तुम उन से लड़ो यहां तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह बाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। **(193)**

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ

उस से	और (न) पहुँचाओ	नाहक़	आपस में	अपने माल	खाओ	और न

اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ

लोग	माल	से	कोई हिस्सा	ताकि तुम खाओ	हाकिमों तक

بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ١٨٨ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ ع ٢٣ ٦ ٧

नए चाँद	से	वह आप से पूछते हैं	188	जानते हो	और तुम	गुनाह से

قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ

यह कि	नेकी	और नहीं	और हज	लोगों के लिए	औक़ात	यह	आप कह दें

تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ

परहेज़गारी करे	जो	नेकी	और लेकिन	उन की पुश्त	से	घर (जमा)	तुम आओ

وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	अल्लाह	और तुम डरो	दरवाज़े	से	घर (जमा)	और तुम आओ

تُفْلِحُوْنَ ١٨٩ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ

वह जो कि	अल्लाह	रास्ता	में	और तुम लड़ो	189	कामयाबी हासिल करो

يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ١٩٠

190	ज़ियादती करने वाले	नहीं पसन्द करता	बेशक अल्लाह	और ज़ियादती न करो	तुम से लड़ते हैं

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ

से	और उन्हें निकाल दो	तुम उन्हें पाओ	जहां	और उन्हें मार डालो

حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ

क़त्ल	से	ज़ियादा संगीन	और फ़ित्ना	उन्हों ने तुम्हें निकाला	जहां

وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ

वह तुम से लड़ें	यहां तक कि	मस्जिदे हराम (ख़ानाए कअ़बा)	पास	उन से लड़ो	और न

فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

बदला	इसी तरह	तो तुम उन से लड़ो	वह तुम से लड़ें	पस अगर	उस में

الْكٰفِرِيْنَ ١٩١ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٩٢

192	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	तो बेशक	वह बाज़ आ जाएं	फिर अगर	191	काफ़िर (जमा)

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ

दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे	यहां तक कि	और तुम उन से लड़ो

لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ١٩٣

193	ज़ालिम (जमा)	पर	सिवाए	ज़ियादती	तो नहीं	वह बाज़ आ जाएं	पस अगर	अल्लाह के लिए

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

ज़ियादती की	पस जिस	बदला	और हुर्मतें	बदला हुर्मत वाला महीना	हुर्मत वाला महीना

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪

तुम पर	उस ने ज़ियादती की	जो	जैसी	उस पर	तो तुम ज़ियादती करो	तुम पर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ

में	और तुम ख़र्च करो	194	परहेज़गारों	साथ	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो

ع ١ — عند المتقدمين ١٢

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ

और नेकी करो	हलाकत	तरफ़	अपने हाथ	डालो	और न	अल्लाह	रास्ता

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ

अल्लाह के लिए	और उमरा	हज	और पूरा करो	195	नेकी करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह

فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

यहां तक	अपने सर	मुंडवाओ	और न	कुरबानी	से	मयस्सर आए	तो जो	तुम रोक दिए जाओ	फिर अगर

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى

तक्लीफ़	उस के	या	बीमार	तुम में से	हो	पस जो	अपनी जगह	कुरबानी	पहुँच जाए

مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۫ قف

तुम अम्न में हो	फिर जब	कुरबानी	या	सदक़ा	या	रोज़ा	से	तो बदला	उस का सर	से

فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ

कुरबानी से	मयस्सर आए	तो जो	हज	तक	उमरे का	फ़ाइदा उठाए	तो जो

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ

जब तुम वापस आजाओ	और सात	हज में	दिन	तीन	तो रोज़ा रखे	न पाए	फिर जो

تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي

मौजूद	उस के घर वाले	न हों	लिए-जो	यह	पूरे	दस	यह

ع ٨ ٢٤ ٨ — الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ ع

196	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	मस्जिदे हराम

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ

और न गाली दे	बेपर्दा हो	तो न	हज	उन में	लाज़िम कर लिया	पस जिस ने	मालूम (मुक़र्रर)	महीने	हज

وقف النبي ﷺ

وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا

और तुम ज़ादेराह ले लिया करो	अल्लाह	उसे जानता है	नेकी से	तुम करोगे	और जो	हज में	और न झगड़ा

فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

197	ऐ अ़क़्ल वालो	और मुझ से डरो	तक़्वा	ज़ादे राह	बेहतर	पस बेशक

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तक्लीफ़ हो तो वह बदला दे रोज़े से या सदक़े से या कुरबानी से, फिर जब तुम अम्न में हो तो जो फ़ाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (देदे), फिर जो न पाए तो वह रोज़े रख ले तीन दिन हज के अय्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मस्जिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (196)

हज के महीने मुक़र्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न बेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में, और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस बेशक बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है, और ऐ अ़क़्ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नही अगर तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो (तिजारत करो), फिर जब तुम अ़रफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअ़रे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और बेशक उस से पहले तुम नावाक़िफ़ों में से थे। **(198)**

फिर तुम लौटो जहां से लोग लौटें, और अल्लाह से मग़्फ़िरत चाहो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है **(199)**

फिर जब तुम हज के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। **(200)**

और उन में से कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले। **(201)**

यही लोग हैं उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्हों ने कमाया, और अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है। **(202)**

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुक़र्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जल्दी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। **(203)**

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

अपना रब	से	फ़ज़्ल	तलाश करो	अगर तुम	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं

فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ

नज़दीक	अल्लाह	तो याद करो	अ़रफ़ात	से	तुम लौटो	फिर जब

الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ

तुम थे	और बेशक	उस ने तुम्हें हिदायत दी	जैसे	और उसे याद करो	मशअ़रे हराम

مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ

से - जहां	तुम लौटो	फिर	198	नावाक़िफ़	ज़रूर-से	उस से पहले

اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	बेशक	अल्लाह	और मग़्फ़िरत चाहो	लोग	लौटें

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ

हज के मरासिम	तुम अदा कर चुको	फिर जब	199	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ

याद	ज़ियादा	या	अपने बाप दादा	जैसी तुम्हारी याद	अल्लाह	तो याद करो

فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا

दुन्या	में	हमें दे	ऐ हमारे रब	कहता है	जो	पस-से-आदमी

وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

कहता है	जो	और उन से	200	कुछ हिस्सा	आख़िरत	में	उस के लिए	और नहीं

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

भलाई	और आख़िरत में	भलाई	दुन्या में	हमें दे	ऐ हमारे रब

وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

उन्हों ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	उन के लिए	यही लोग	201	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	और हमें बचा

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ النصف

में	अल्लाह	और तुम याद करो	202	हिसाब लेने वाला	तेज़	और अल्लाह

اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ

गुनाह	तो नहीं	दो दिन	में	जल्द चला गया	पस जो	दिन गिनती के

عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ

डरता रहा	लिए - जो	उस पर	गुनाह	तो नहीं	ताख़ीर की	और जिस	उस पर

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

203	जमा किए जाओगे	उस की तरफ़	कि तुम	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ

और वह गवाह बनाता है अल्लाह को	दुन्या	ज़िन्दगी	में	उस की बात	तुम्हे भली मालूम होती है	जो	लोग	और से

عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى

दौड़ता फिरे	वह लौटे	और जब	204	झगड़ालू	सख़्त	हालांकि वह	उस के दिल में	जो	पर

فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ

और नस्ल	खेती	और तबाह करे	उस में	ताकि फ़साद करे	ज़मीन	में

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ

अल्लाह	डर	उस को	कहा जाए	और जब	205	फ़साद	न पसन्द करता है	और अल्लाह

اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

206	ठिकाना	और अलबत्ता बुरा	जहन्नम	तो काफ़ी है उस को	गुनाह पर	इज़्ज़त (गुरूर)	उसे आमादा करे

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह की रज़ा	हासिल करना	अपनी जान	बेच डालता है	जो	लोग	और से

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا

तुम दाख़िल हो जाओ	जो लोग ईमान लाए	ऐ	207	बन्दों पर	मेहरबान	और अल्लाह

فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ

शैतान	क़दम	पैरवी करो	और न	पूरे पूरे	इस्लाम	में

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	तुम डगमगा गए	फिर अगर	208	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह

مَا جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

209	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह	कि	तो जान लो	वाज़ेह अहकाम	तुम्हारे पास आए	जो

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ

सायबानों में	अल्लाह	आए उन के पास	कि	सिवाए (यही)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या

مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۭ

मामला	और चुका दिया जाए	और फ़रिश्ते	बादल	से

ع ۲۵ ۱۲ ۹ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ

बनी इस्राईल	पूछो	210	तमाम मामलात	लौटेंगे	अल्लाह	और तरफ़

كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ

अल्लाह	नेमत	बदल डाले	और जो	खुली	निशानियां	से	हम ने उन्हें दीं	किस क़द्र

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

211	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	तो बेशक	आई उस के पास	जो	उस के बाद

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के उमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को नापसंद करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उस को इज़्ज़त (गुरूर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफ़ी है, और अलबत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह अहकाम आ गए तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मामला चुका दिया जाए, और तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियां दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई तो बेशक अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (211)

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की ज़िन्दगी, और वह हँसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है बेशुमार। **(212)**

लोग एक उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्हों ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास वाज़ेह अहकाम आ गए आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी अपने इज़्न से जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया था, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। **(213)**

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहूँची सख़्ती और तक्लीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है। **(214)**

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए और क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानने वाला है। **(215)**

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ

जो लोग	से	और वह हँसते हैं	दुन्या	ज़िन्दगी	वह लोग जो कुफ़्र किया	आरास्ता की गई

اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ

وقف لازم

रिज़्क़ देता है	और अल्लाह	क़ियामत के दिन	उन से बालातर	परहेज़गार हुए	और जो लोग	ईमान लाए

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟

एक	उम्मत	लोग	थे	212	हिसाब	बग़ैर	वह चाहता है	जिसे

فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۖ وَاَنْزَلَ

और नाज़िल की	और डराने वाले	ख़ुशख़बरी देने वाले	नबी	अल्लाह	फिर भेजे

مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا

उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	जिस में	लोग	दरमियान	ताकि फ़ैसला करे	बरहक़	किताब	उन के साथ

فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	दी गई	जिन्हें	मगर	उस में	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	उस में

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	अल्लाह	पस हिदायत दी	उन के दरमियान (आपस की)	ज़िद	वाज़ेह अहकाम	आए उन के पास	जो - जब

لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ

वह चाहता है	जिसे	हिदायत देता है	और अल्लाह	अपने इज़्न से	सच	से (पर)	उस में	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	लिए - जो

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ

जन्नत	तुम दाख़िल हो जाओगे	कि	तुम ख़याल करते हो	क्या	213	सीधा	रास्ता	तरफ़

وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ

तुम से पहले	से	गुज़रे	जो	जैसे	आई तुम पर	और जब कि नहीं

مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ

रसूल	कहने लगे	यहां तक	और वह हिला दिए गए	और तक्लीफ़	सख़्ती	पहूँची उन्हें

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ

अल्लाह	मदद	बेशक	आगाह रहो	अल्लाह की मदद	कब	उन के साथ	ईमान लाए	और वह जो

قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

से	तुम ख़र्च करो	जो	आप कह दें	ख़र्च करें	क्या कुछ	वह आप से पूछते हैं	214	क़रीब

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

और मोहताज (जमा)	और यतीम (जमा)	और क़राबतदार (जमा)	सो माँ बाप के लिए	माल

وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾

215	जानने वाला	उसे	अल्लाह	तो बेशक	कोई नेकी	तुम करोगे	और जो	और मुसाफ़िर

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا

एक चीज़	तुम नापसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	नागवार	और वह	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की गई

وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

तुम्हारे लिए	बुरी	और वह	एक चीज़	तुम पसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	बेहतर	और वह

٣٦ ع ٦ ١٠ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٢١٦ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ

महीना हुर्मत वाला	से	वह आप से सवाल करते हैं	216	नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह

قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह	रास्ता	से	और रोकना	बड़ा	उस में	जंग	आप कह दें	उस में	जंग

وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के नज़दीक	बहुत बड़ा	उस से	उस के लोग	और निकाल देना	और मस्जिदे हराम	उस का	और न मानना

وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

वह तुम से लड़ेंगे	और वह हमेशा रहेंगे	क़त्ल	से	बहुत बड़ा	और फ़ित्ना

حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ

फिर जाए	और जो	वह कर सकें	अगर	तुम्हारा दीन	से	तुम्हें फेर दें	यहां तक कि

مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

ज़ाया हो गए	तो यही लोग	काफ़िर	और वह	फिर मर जाए	अपना दीन	से	तुम में से

اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

दोज़ख़	वाले	और यही लोग	और आख़िरत	दुन्या	में	उन के अ़मल

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢١٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا

उन्हों ने हिज्रत की	और वह लोग जो	ईमान लाए	जो लोग	बेशक	217	हमेशा रहेंगे	उस में	वह

وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की रहमत	उम्मीद रखते हैं	यही लोग	अल्लाह का रास्ता	में	और उन्हों ने जिहाद किया

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢١٨ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ

और जुआ	शराब	से (बारे में)	वह पूछते हैं आप से	218	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह

قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ

बहुत बड़ा	और उन दोनों का गुनाह	लोगों के लिए	और फ़ाइदे	बड़ा	गुनाह	उन दोनों में	आप कह दें

مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

ज़ाइद अज़ ज़रूरत	आप कह दें	वह ख़र्च करें	क्या कुछ	वह पूछते हैं आप (स) से	उन का फ़ाइदा	से

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١٩ ۙ

219	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

तुम पर जंग फ़र्ज़ की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। **(216)**

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप (स) कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मस्जिदे हराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है और फ़ित्ना क़त्ल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफ़िर हो तो यही लोग हैं जिन के अ़मल ज़ाया हो गए दुन्या में और आख़िरत में और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(217)**

बेशक जो ईमान लाए और जिन लोगों ने हिज्रत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। **(218)**

वह आप (स) से पूछते हैं शराब और जुआ के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए फ़ाइदे (भी) हैं (लेकिन) उन का गुनाह उन के फ़ाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें ज़ाइद अज़ ज़रूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो **(219)**

दुनिया में और आख़िरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह ख़राबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को जरूर मुशक़्क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। **(220)**

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुशरिक औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे, और मुशरिकों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान ग़ुलाम बेहतर है मुशरिक से अगरचे वह तुम्हें भला लगे, यह लोग दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। **(221)**

वह आप (स) से हालते हैज़ के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज़ में और उन के क़रीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। **(222)**

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और ख़ुशख़बरी दें ईमान वालों को। **(223)**

और अपनी क़स्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगों के दरमियान सुलह कराने (से बाज़ रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। **(224)**

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ

इस्लाह	आप कह दें	यतीम (जमा)	से (बारे में)	और वह आप (स) से पूछते हैं	और आख़िरत	दुन्या में

لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ

ख़राबी करने वाला	जानता है	और अल्लाह	तो भाई तुम्हारे	मिला लो उन को	और अगर	बेहतर	उन की

مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

220	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	ज़रूर मुशक़्क़त में डालता तुम को	चाहता अल्लाह	और अगर	इस्लाह करने वाला	से (को)

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ

से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता लौंडी	वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशरिक औरतें	निकाह करो	और न

مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ

वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशरिकों	निकाह करो	और न	वह भली लगे तुम्हें	अगरचे	मुशरिक औरत

وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ

वही लोग	वह भला लगे तुम्हें	अगरचे	मुशरिक	से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता गुलाम

يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ

और बख़्शिश	जन्नत की तरफ़	बुलाता है	और अल्लाह	दोज़ख़ की तरफ़	बुलाते हैं

بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾ ع ٢٧ ٥ ١١

221	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने अहकाम	और वाज़ेह करता है	अपने हुक्म से

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ

औरतें	पस तुम अलग रहो	गन्दगी	वह	आप केह दें	हालते हैज़	से (बारे में)	और वह पूछते हैं आप (स) से

فِى الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ

तो आओ उन के पास	वह पाक हो जाएं	पस जब	वह पाक हो जाएं	यहां तक कि	क़रीब जाओ उन के	और न	हालते हैज़	में

مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ

और दोस्त रखता है	तौबा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	हुक्म दिया तुम्हें	जहां से

الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾ نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى

जहां से	अपनी खेती	सो तुम आओ	तुम्हारी	खेती	औरतें तुम्हारी	222	पाक रहने वाले

شِئْتُمْ ۫ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ

मिलने वाले उस से	कि तुम	और तुम जान लो	अल्लाह	और डरो	अपने लिए	और आगे भेजो	तुम चाहो

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ

कि	अपनी क़स्मों के लिए	निशाना	अल्लाह	बनाओ	और न	223	ईमान वाले	और ख़ुशख़बरी दें

تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾

224	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	लोग	दरमियान	और सुलह कराओ	और परहेज़गारी करो	तुम हुस्ने सुलूक करो

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ

पकड़ता है तुम्हें	और लेकिन	क़स्में तुम्हारी	में	लग़्व (बेहूदा)	अल्लाह	नहीं पकड़ता तुम्हें

بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

क़स्म खाते हैं	उन लोगों के लिए जो	225	बुर्दबार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	दिल तुम्हारे	कमाया	पर-जो

مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	रुजूअ़ करलें	फिर अगर	महीने	चार	इन्तिज़ार	औ़रतें अपनी	से

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

सुनने वाला	अल्लाह	तो बेशक	तलाक़	उन्हों ने इरादा किया	और अगर	226	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ

मुद्दते हैज़	तीन	अपने तईं	इन्तिज़ार करें	और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें	227	जानने वाला

وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ

अगर	उन के रहम (जमा)	में	अल्लाह	पैदा किया	जो	वह छुपाएं	कि	उन के लिए	और जाइज़ नहीं

كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ

वापसी उन की	ज़ियादा हक़दार	और ख़ाविन्द उन के	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखती हैं

فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ

औ़रतों पर (फ़र्ज़)	जो	जैसे	और औ़रतों के लिए	बेहतरी (हुस्ने सुलूक)	वह चाहें	अगर	उस में

بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	एक दर्जा	उन पर	और मर्दों के लिए	दस्तूर के मुताबिक़

ع ٢٨ ٧ ١٢ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌ ۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ

या	दस्तूर के मुताबिक़	फिर रोक लेना	दो बार	तलाक़	228	हिक्मत वाला

تَسْرِيْحٌ ۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ

उस से जो	तुम ले लो	कि	तुम्हारे लिए	जाइज़	और नहीं	हुस्ने सुलूक से	रुख़सत करना

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह कि हुदूद	क़ाइम रख सकेंगे	कि न	दोनों अन्देशा करें	कि	सिवाए	कुछ	तुम ने दिया उन को

فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	अल्लाह की हुदूद	कि वह क़ाइम न रख सकेंगे	तुम डरो	फिर अगर

فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ

आगे बढ़ो उस से	पस न	अल्लाह की हुदूद	यह	उस का	औ़रत बदला दे	उस में जो

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

229	ज़ालिम	वह	पस वही लोग	अल्लाह की हुदूद	आगे बढ़ता है	और जो

तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन तुम्हें पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे दिलों ने कमाया (इरादे से किया) और अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दबार है। (225)

उन लोगों के लिए जो अपनी औ़रतों के (पास न जाने की) क़स्म खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार माह, फिर अगर वह रुजूअ़ कर लें तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (226)

और अगर उन्हों ने तलाक़ का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (227)

और तलाक़ याफ़्ता औ़रतें अपने तईं इन्तिज़ार करें तीन हैज़ तक, और उन के लिए जाइज़ नहीं कि वह छुपाएं जो अल्लाह ने उन के रहमों में पैदा किया अगर वह अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं, और उन के ख़ाविन्द उन की वापसी के ज़ियादा हक़दार हैं उस (मुद्दत) में अगर वह बेहतरी (हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और औ़रतों के लिए (हक़) है जैसे औ़रतों पर (मर्दों का) हक़ है दस्तूर के मुताबिक़, और मर्दों का उन पर एक दर्जा (बरतरी) है और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (228)

तलाक़ दो बार है, फिर रोक लेना है दस्तूर के मुताबिक़ या रुख़सत कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं तुम्हारे लिए जाइज़ कि जो तुम ने उन्हें दिया है उस से कुछ वापस ले लो सिवाए उस के कि दोनों अन्देशा करें कि अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे, फिर अगर तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह की हुदूद क़ाइम न रख सकेंगे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औ़रत उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह अल्लाह की हुदूद हैं, पस उन के आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ता है पस वही लोग ज़ालिम हैं। (229)

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ

फिर अगर	तलाक़ दी उस को	तो जाइज़ नहीं	उस के लिए	उस के बाद	यहां तक कि	वह निकाह कर ले

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ

ख़ाविन्द	उस के अ़लावा	फिर अगर	तलाक़ देदे उस को	तो गुनाह नहीं	उन दोनों पर	अगर

يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

वह रुजूअ़ कर लें	बशर्त यह कि	वह ख़याल करें	कि	वह क़ाइम रखेंगे	अल्लाह की हुदूद	और यह

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۰﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

अल्लाह की हुदूद	उन्हें वाज़ेह करता है	जानने वालों के लिए	230	और जब	तुम तलाक़ दो

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

औरतें	फिर वह पूरी कर लें	अपनी इद्दत	तो रोको उन को	दस्तूर के मुताबिक़

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

या	रुख़सत कर दो	दस्तूर के मुताबिक़	और तुम न रोको उन्हें	नुक़्सान

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

ताकि तुम ज़ियादती करो	और जो	करेगा	यह	तो बेशक उस ने ज़ुल्म किया	अपनी जान

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ز وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

और न	ठहराओ	अल्लाह के अहकाम	मज़ाक़	और याद करो	अल्लाह की नेमत

عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ

तुम पर	और जो	उस ने उतारा	तुम पर	से	किताब	और हिक्मत

يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

वह नसीहत करता है तुम्हें	उस से	और तुम डरो	अल्लाह	और जान लो	कि	अल्लाह	हर	चीज़

عَلِيْمٌ ﴿۲۳۱﴾ ع وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ　　ع ٢٩ ٣ ١٣ الثلثة

जानने वाला	231	और जब	तुम तलाक़ दो	औरतें	फिर वह पूरी कर लें	अपनी इद्दत

فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا

तो न	रोको उन्हें	कि	वह निकाह करें	ख़ाविन्द अपने	जब	वह राज़ी हों

بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ

आपस में	दस्तूर के मुताबिक़	यह	नसीहत की जाती है	उस से	जो	हो

مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى

तुम में से	ईमान रखता	अल्लाह पर	और यौमे आख़िरत	यही	ज़ियादा सुथरा

لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾

तुम्हारे लिए	और ज़ियादा पाकीज़ा	और अल्लाह	जानता है	और तुम	नहीं	जानते	232

पस अगर उस को तलाक़ दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अ़लावा किसी (दूसरे) ख़ाविन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक़ देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रुजूअ़ कर लें, बशर्त यह कि वह ख़याल करें कि वह अल्लाह की हुदूद क़ाइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, वह उन्हें जानने वालों के लिए वाज़ेह करता है। **(230)**

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रुख़सत कर दो और तुम उन्हें नुक़्सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा बेशक उस ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अल्लाह के अहकाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो, और जो उस ने तुम पर किताब और हिक्मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। **(231)**

और जब तुम औ़रतों को तलाक़ दे दो, फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने ख़ाविन्दों से निकाह करने से न रोको जब वह राज़ी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। **(232)**

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ

चाहे	जो कोई	पूरे	दो साल	अपनी औलाद	दूध पिलाएं	और माएँ

اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

दस्तूर के मुताबिक़	और उन का लिबास	उन का खाना	जिस का बच्चा (बाप)	और पर	दूध पिलाने कि मुद्दत	कि वह पूरी करे

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ

जिस का बच्चा (बाप)	और न	उस के बच्चे के सबब	माँ	न नुक़सान पहुँचाया जाए	उस की वुसअ़त	मगर	कोई शख़्स	नहीं तक्लीफ़ दी जाती

بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ

आपस की रज़ामन्दी से	दूध छुड़ाना	दोनों चाहें	फिर अगर	यह-उस	ऐसा	वारिस	और पर	उस के बच्चे के सबब

مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ

कि	तुम चाहो	और अगर	उन दोनों पर	गुनाह	तो नहीं	और बाहम मशवरा	दोनों से

تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ

तुम ने दिया था	जो	तुम हवाले कर दो	जब	तुम पर	तो गुनाह नहीं	अपनी औलाद	तुम दूध पिलाओ

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

233	देखने वाला	तुम करते हो	से-जो	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह	और डरो	दस्तूर के मुताबिक़

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

अपने आप को	वह इन्तिज़ार में रखें	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम से	वफ़ात पा जाएं	और जो लोग

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	तो नहीं गुनाह	अपनी मुद्दत (इद्दत)	वह पहुँच जाएं	फिर जब	और दस (दिन)	महीने	चार

فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

234	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	दस्तूर के मुताबिक़	अपनी जानें (अपने हक़)	में	वह करें	में-जो

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ

तुम छुपाओ	या	औरतों को	पैग़ामे निकाह	उस से	इशारे में	में-जो	तुम पर	और नहीं गुनाह

فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

न वादा करो उन से	और लेकिन	जल्द ज़िक्र करोगे उन से	कि तुम	जानता है अल्लाह	अपने दिलों में

سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ

निकाह	गिरह	इरादा करो	और न	दस्तूर के मुताबिक़	बात	तुम कहो	मगर यह कि	छुप कर

حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ

में	जो	जानता है	अल्लाह	कि	और जान लो	उस की मुद्दत	इद्दत	पहुँच जाए	यहां तक

٣٠ ع ١٤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾

235	तहम्मुल वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो	सो डरो उस से	अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएं जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक़, और किसी को तक्लीफ़ नहीं दी जाती मगर उस की वुसअ़त (बरदाश्त) के मुताबिक़, माँ को नुक़सान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ (ग़ैर औ़रत से) तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जब तुम दस्तूर के मुताबिक़ (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। **(233)**

और तुम में से जो लोग वफ़ात पा जाएं और छोड़ जाएं बीवियां, वह (बेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएं (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक़ में करें दस्तूर के मुताबिक़, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। **(234)**

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औ़रतों को इशारे कनाए में निकाह का पैग़ाम दो या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक़ बात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहां तक कि इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाए, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मुल वाला है। **(235)**

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो या उन के लिए मेहर मुक़र्रर न किया हो, और उन्हें ख़र्च दो, ख़ुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, ख़र्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेहर मुक़र्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुक़र्रर किया सिवाए उस के कि वह माफ़ कर दें या वह माफ़ कर दे जिस के हाथ में अक़्दे निकाह है, और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के क़रीब तर है, और बाहम एहसान करना न भूलो, बेशक जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (ख़ुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फ़रमांबरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो), फिर जब अम्न पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो अपनी बीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़्क़ा की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तईं दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लक़ा औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़्क़ा लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241)

इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (242)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ

या	तुम ने उन्हें हाथ लगाया	जो न	औरतें	तुम तलाक़ दो	अगर	तुम पर	नहीं गुनाह

تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ

उस की हैसियत	ख़ुशहाल	पर	और उन्हें ख़र्च दो	मेहर	उन के लिए	मुक़र्रर किया

وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

236	नेकोकार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	ख़र्च	उस की हैसियत	तंगदस्त	और पर

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ

और तुम मुक़र्रर कर चुके हो	उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	और अगर

لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ

या	वह माफ़ कर दें	यह कि	सिवाए	तुम ने मुक़र्रर किया	जो	तो निस्फ़	मेहर	उन के लिए

يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ

परहेज़गारी के	ज़ियादा क़रीब	तुम माफ़ कर दो	और अगर	निकाह की गिरह	उस के हाथ में	वह जो	माफ़ कर दे

وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

237	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	बेशक अल्लाह	बाहम	एहसान करना	और न भूलो

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۤ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	और खड़े रहो	दरमियानी	और नमाज़	नमाज़ों की	तुम हिफ़ाज़त करो

قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

अल्लाह	तो याद करो	तुम अम्न पाओ	फिर जब	सवार	या	तो प्यादापा	तुम्हें डर हो	फिर अगर	238	फ़रमांबरदार (जमा)

كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ

वफ़ात पा जाएं	और जो लोग	239	जानते	तुम न थे	जो	उस ने तुम्हें सिखाया	जैसा कि

مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا

नान नफ़्क़ा	अपनी बीवियों के लिए	वसीयत	बीवियां	और छोड़ जाएं	तुम में से

اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ

में	तुम पर	गुनाह	तो नहीं	वह निकल जाएं	फिर अगर	निकाले	बग़ैर	एक साल	तक

مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

240	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	दस्तूर	से	अपने तईं	में	जो वह करें

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

241	परहेज़गारों	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	नान नफ़्क़ा	और मुतल्लक़ा औरतों के लिए

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ ع ٣١ ٧ ١٥

242	समझो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ خَرَجُوۡا مِنۡ دِيَارِهِمۡ وَهُمۡ اُلُوۡفٌ حَذَرَ الۡمَوۡتِ ۖ

मौत	डर	हज़ारों	और वह	अपने घर (जमा)	से	निकले	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوۡتُوۡا ۫ ثُمَّ اَحۡيَاهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوۡ فَضۡلٍ

फ़ज़्ल वाला	बेशक अल्लाह	उन्हे ज़िन्दा किया	फिर	तुम मर जाओ	अल्लाह	उन्हें	सो कहा

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۲۴۳﴾ وَقَاتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	और तुम लड़ो	243	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	लोगों पर

وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۴۴﴾ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يُقۡرِضُ اللّٰهَ

क़र्ज़ दे अल्लाह	जो कि	वह	कौन	244	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो

قَرۡضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضۡعَافًا كَثِيۡرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقۡبِضُ وَيَبۡصُۜطُ ۖ

और फ़राख़ी करता है	तंगी करता है	और अल्लाह	कई गुना ज़ियादा	उस के लिए	पस वह उसे बढ़ा दे	क़र्ज़ अच्छा

وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۲۴۵﴾ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الۡمَلَاِ مِنۡۢ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِ

बाद	से	बनी इस्राईल	से	सरदारों	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	245	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़

وقف لازم

مُوۡسٰى ۘ اِذۡ قَالُوۡا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابۡعَثۡ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह का रास्ता	में	हम लड़ें	एक बादशाह	हमारे लिए	मुक़र्रर कर दें	अपने नबी से	उन्हों ने कहा	जब	मूसा (अ)

قَالَ هَلۡ عَسَيۡتُمۡ اِنۡ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الۡقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوۡا ؕ

कि तुम न लड़ो	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की जाए	अगर	हो सकता है कि तुम	क्या	उस ने कहा

قَالُوۡا وَمَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَقَدۡ اُخۡرِجۡنَا مِنۡ

से	हम निकाले गए	और अलबत्ता	अल्लाह की राह	में	हम लड़ेंगे	कि न	और हमें क्या हुआ	वह कहने लगे

دِيَارِنَا وَاَبۡنَآٮِٕنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيۡهِمُ الۡقِتَالُ تَوَلَّوۡا اِلَّا قَلِيۡلًا

चन्द	सिवाए	वह फिर गए	जंग	उन पर फ़र्ज़ की गई	फिर जब	और अपनी आल औलाद	अपने घर

مِّنۡهُمۡ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِالظّٰلِمِيۡنَ ﴿۲۴۶﴾ وَقَالَ لَهُمۡ نَبِيُّهُمۡ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	उन का नबी	उन्हें	और कहा	246	ज़ालिमों को	जानने वाला	और अल्लाह	उन में से

قَدۡ بَعَثَ لَكُمۡ طَالُوۡتَ مَلِكًا ؕ قَالُوۡۤا اَنّٰى يَكُوۡنُ لَهُ الۡمُلۡكُ

बादशाहत	उस के लिए	हो सकती है	कैसे	वह बोले	बादशाह	तालूत	तुम्हारे लिए	मुक़र्रर कर दिया है

عَلَيۡنَا وَنَحۡنُ اَحَقُّ بِالۡمُلۡكِ مِنۡهُ وَلَمۡ يُؤۡتَ سَعَةً مِّنَ الۡمَالِ ؕ

माल	से	वुस्अत	और नहीं दी गई	उस से	बादशाहत के	ज़ियादा हक़दार	और हम	हम पर

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصۡطَفٰٮهُ عَلَيۡكُمۡ وَزَادَهٗ بَسۡطَةً فِى الۡعِلۡمِ

इल्म	में	वुस्अत	और उसे ज़ियादा दी	तुम पर	उसे चुन लिया	अल्लाह	बेशक	उस ने कहा

وَالۡجِسۡمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤۡتِىۡ مُلۡكَهٗ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۴۷﴾

247	जानने वाला है	वुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिसे	अपना मुल्क	देता है	और अल्लाह	और जिस्म

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे, सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244)

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राख़ी (भी) देता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ़ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्हों ने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम लड़ें अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा: हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे, और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्रर कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है? हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे वुस्अत नहीं दी गई माल से, उस ने कहा बेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा वुस्अत दी है इल्म और जिस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (247)

और उन्हें उन के नबी ने कहा बेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास ताबूत आएगा, उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीज़ें जो आले मूसा और आले हारून ने छोड़ी थीं उसे फ़रिश्ते उठा लाएंगे, बेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। **(248)**

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा बेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह बेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवा उन्हों ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए थे उस के पार हुए, उन्हों ने कहा आज हमें ताक़त नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यक़ीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्हों ने कहा, बारहा छोटी जमाअतें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर, और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। **(249)**

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्हों ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब्र डाल दे, और हमारे क़दम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर क़ौम पर। **(250)**

फिर उन्हों ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़त्ल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अ़ता की और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम जहानों पर फ़ज़्ल वाला है। **(251)**

यह अल्लाह के अहकाम हैं, हम वह आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और बेशक आप (स) ज़रूर रसूलों में से हैं। **(252)**

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

उस में	ताबूत	आएगा तुम्हारे पास	कि	उस की हुकूमत	निशानी	बेशक	उस का नबी	उन्हें	और कहा

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ

और आले हारून	आले मूसा	छोड़ा	उस से जो	और बची हुई	तुम्हारा रब	से	सामाने तसकीन

تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾ ع ٣٢ ١٦

248	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	निशानी	उस में	बेशक	फ़रिश्ते	उठाएंगे उसे

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ

एक नहर से	तुम्हारी आज़माइश करने वाला	बेशक अल्लाह	उस ने कहा	लश्कर के साथ	तालूत	बाहर निकला	फिर जब

فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا

सिवाए	मुझ से	तो बेशक वह	उसे न चखा	और जिस	मुझ से	तो नहीं	उस से	पी लिया	पस जिस

مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ

उस के पार हुए	पस जब	उन से	चन्द एक	सिवाए	उस से	फिर उन्हों ने पी लिया	अपने हाथ से	एक चुल्लू	चुल्लू भर ले	जो

هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ

और उस का लश्कर	जालूत के साथ	आज	हमारे लिए	नहीं ताक़त	उन्हों ने कहा	उस के साथ	ईमान लाए	और वह जो	वह

قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ

छोटी	जमाअ़तें	से	बारहा	अल्लाह	मिलने वाले	कि वह	यक़ीन रखते थे	जो लोग	कहा

غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا

और जब	249	सब्र करने वाले	साथ	और अल्लाह	अल्लाह के हुक्म से	बड़ी	जमाअ़तें	ग़ालिब हुईं

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

और जमादे	सब्र	हम पर	डाल दे	ऐ हमारे रब	उन्हों ने कहा	और उस का लश्कर	जालूत के	आमने सामने हुए

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ قف

अल्लाह के हुक्म से	फिर उन्हों ने शिकस्त दी उन्हें	250	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद कर	हमारे क़दम

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

और उसे सिखाया	और हिक्मत	मुल्क	अल्लाह	और उसे दिया	जालूत	दाऊद (अ)	और क़त्ल किया

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

बाज़ के ज़रीए	बाज़ लोग	लोग	अल्लाह	हटाता	और अगर न	चाहा	जो

لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ

यह	251	तमाम जहान	पर	फ़ज़्ल वाला	अल्लाह	और लेकिन	ज़मीन	ज़रूर ख़राब हो जाती

اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

252	रसूल (जमा)	ज़रूर-से	और बेशक आप (स)	ठीक ठीक	आप पर	हम सुनाते हैं उन को	अल्लाह के अहकाम